EDUZONE: International Peer Reviewed/Refereed Multidisciplinary Journal (EIPRMJ), ISSN: 2319-5045
Volume 1, Issue 1, July-December, 2012, Available online at: www.eduzonejournal.com

भारतीय जनता पार्टी की बहुआयामी विचारधारा

सुनीता[1], रोचना मित्तल[2]

शोधार्थीनी, एस० डी० (पी०जी०) कॉलेज, गाज़ियाबाद

Corresponding Author: Sunita: ravindersahdev1972@gmail.com

शोध सार

लोकतांत्रिक व्यवस्था में राजनीतिक दलों की अत्यंत विशिष्ट भूमिका होती है ।राजनीतिक दल का वास्तविक कार्य है कि वह अपने नेताओं की सरकार सत्तारूढ़ करें जिसके लिए राजनीतिक दल अपने मूल सिद्धांतो एवं विचारधारा पर आधारित चुनावी घोषणा पत्र के साथ आम चुनाव में जनता के समक्ष प्रस्तुत होते हैं ताकि जनता उन में अपना विश्वास व्यक्त करके उनका चुनाव कर सके और वह अपनी निश्चित विचारधारा पर आधारित घोषणा पत्र में घोषित नीतियों के अनुसार कार्य करके जनता के लिए लोक कल्याणकारी व्यवस्था का निर्माण कर सके । विचारधारा राजनीतिक दलों के लिए विश्वास व आस्था का प्रतीक होती है जिन विचारों को कार्य रूप में परिवर्तित करने के लिए राजनीतिक संगठन का जन्म होता है विचारों का वही समूह उस राजनीतिक दल की विचारधारा का रूप ग्रहण कर लेता है ।विचारधारा ही दल के अनुयायियों के समक्ष ऐसे प्रयोजन एवं कारण प्रस्तुत करती है जिसकी रक्षा के लिए दल के अनुयायी संघर्ष और बलिदान को तैयार रहते हैं ।विचारधारा के आधार पर ही राजनीतिक दल के औचित्य का निर्धारण होता है जिस राजनीतिक दल की विचारधारा सामाजिक हितो के विपरीत आमजन की भावनाओं को आहत करने वाली होती है उन राजनीतिक दलों का पतन शीघ्र हो जाता है।भारतीय राजनीतिक दलों व उनसे संबंधित विचारधाराओं का उदय अंग्रेजी शासन काल में हुआ था जिन में सर्वप्रथम राष्ट्रीय कांग्रेस थी जिसका जन्म ब्रिटिश शासन के विरुद्ध दबाव समूह के रूप में हुआ था। राष्ट्रीय आंदोलन में अग्रणी होने के कारण इससे जुड़ी जन आकांक्षाओं व विश्वासों ने इसे स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सत्ता प्राप्त करने तथा सरकार चलाने वाले एक राजनीतिक दल का रूप प्रदान किया। कांग्रेस ने लोकतांत्रिक प्रणाली में मिश्रित अर्थव्यवस्था के आधार पर एक जन कल्याणकारी राज्य की स्थापना को आधार बनाकर संपूर्ण भारत में दो दशक तक निर्विरोध रूप से एक छत्र शासन किया परंतु अपने घोषित कार्यक्रमों को लागू करने के लिए कांग्रेस द्वारा जो नितियाँ बनाई गई व उन्हें जिस प्रकार लागू किया गया उससे जन साधारण को कोई लाभ नहीं हुआऔर जनता कांग्रेस के विकल्प की तलाश करने लगी। 1977 में कांग्रेस के विरोधी दलों ने जनता पार्टी के रूप में कांग्रेस का विकल्प भारतीय जनता के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया लेकिन वह सफल नहीं रहे इसी गठबंधन से अलग हुये भारतीय जनसंघ ने भारतीय जनता पार्टी के रूप में नए दल को जन्म दिया।उस समय भाजपा की सर्वप्रमुख इच्छा अपनी विचारधारा, सिद्धांत,

नीतियो, व कार्यक्रमों मे कांग्रेस का विकल्प प्रस्तुत करने, भारत में धर्म राज्य की स्थापना के उच्च आदर्श को सामने रखते हुए संपूर्ण समाज को एकता तथा बंधुत्व के सूत्र में आबद्ध करने वाली भारतीय संस्कृति की सर्वोच्च परंपराओं का पालन करने तथा विकेंद्रित आर्थिक व्यवस्था पर आधारित जन कल्याणकारी व्यवस्था का निर्माण करने की थी।

परिचय

भाजपा का वैचारिक अस्तित्व भारतीय जनसंघ की नीव पर खड़ा हुआ है जो बहुरंगी आयामों को स्वयं में समाहित किये हुए है ।जब '**भारतीय जनसंघ**' जनता पार्टी से अलग होकर भाजपा के रूप में अस्तित्व में आया तो इसने अपनी पंच्निष्ठाओ के माध्यम से अपनी बहुआयामी विचारधारा को भारतीय जनता के समक्ष पंहुचाने का पर्यतन किया ।भारतीय जनता पार्टी की विचारधारा में जहाँ एक और प्राचीन भारतीय संस्कृति से प्रेरित राष्ट्रियता का रंग है जो दूसरी और राजनितिक रंग के रूप में लोकतंत्र के प्रति अपनी निष्ठा को प्रकट करती है।विकृति को राजनीती से दूर रखने के लिए भाजपा उस मूल्यधारित राजनीती की पक्षधर है जिसके कारण किसी समय राजनीती, राजनेता, और राजनैतिक कार्यकर्ताओ को समाज में प्रतिस्था और सम्मान प्राप्त था ।भाजपा ने उस गाँधीवादी समाजवाद को स्वीकार किया जिसे जनसंघने एकात्म मानववाद से अलग नहीं समझा। भाजपा ने साम्प्रदायिकता के आरोपों का खंडन करने के लिए सकारात्मक पन्थनिर्पेक्षता की घोषणा की जिसका अर्थ है कि भाजपा सभी धर्मो का आदर, सभी को न्याय, तुष्टिकरण किसी का नहीं। विचारधारा के साथ विश्लेषण का प्रश्नयह है कि भाजपा ने जिन सिद्धांतों व वैचारिक आधार पर सत्ता ग्रहण की वह सत्तारूढ़ होकर उन सिद्धांतों व वैचारिकता पर कितना कायम रह सकी?

सांस्कृतिक राष्ट्रवादी विचारधारा

उन्होंने मानव को व्यष्टि और समष्टि में बांटकर नहीं देखा ।भारतीय मनीसा ने यही माना कि यदि मानव को सुख भोगना है तो उसे धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष सभी की साधना करनी होगी। मानव को भौतिक व अध्यात्म में बाटा नहीं जा सकता है ।दीनदयाल जी ने कहा की व्यक्ति केवल मानव नहीं, केवल समाज मानव भी नहीं वरन एकात्म मानव है। भारत के दर्शन की एक अन्नत ललक यही है की समग्रता में चोजों को देखा जाये ।समग्रता को समाहित करने वाला तत्व विराट या चिति है।विराट की आवश्यक्ताओं का प्रश्न चतुर्विद है, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष अर्थात पुरुषार्थ ।अत: विराट का साक्षात्कार और चिति का प्रजागरण आवश्यक है ।यह सम्पूर्ण सृष्टिकी दृष्टि से जितना विचारनीय है उतना ही किसी देश और किसी समाज के लिए विचारनीय है देश के लिये ये चिति या विराट देश की राष्ट्रीय चेतना है। विराट की धारणाजीवन को टुकडो में बांटकर नहीं बल्कि समग्रता में उसका अध्यन करती है ।भारतीय चिन्तन की यह समग्रता विविधतायुक्त भारत को एक सूत्र में बांधने वाला तत्त्व है ।दीनदयाल जी की सम्पूर्ण चेता का आदि ओंर अंत इसी राष्ट्रीयता के तत्त्व से परिपूर्ण है ।इसी चिंतन को उन्होंने भाजपा की मूल विचारधारा में प्रस्थापित किया है।

भाजपा जिस ससंकृति को राष्ट्रीयता का अधिष्ठान मानती है उसे हिंदुत्व, भारतीयता और इंडियननैस किसी भी नाम से जाना जा सकता है। भाजपा के लिए राष्ट्रीयता का बोध ही हिंदुत्व है।भारतीय जनसंघ ने संघ का सहयोग भी इसी आधार पर प्राप्त किया ।वे भारतीय संस्कृति के प्रति आत्म गौरव से भरे हुए थे ।हिंदुत्व में अपनी आस्था रखते थे और विश्व गुरु की प्राप्त उपाधि से सम्मानित भारत जेसे विशाल राष्ट्र में यहाँ की परंपरा व सांस्कृतिक मूल्यों को पुनर्जीवित करने और प्रतिष्ठितके लिए प्रतिबन्ध थे ।संघ द्वारा गृहीत इसी विचार के आधार पर भाजपा ने जब भी हिंदुत्ववाद, हिन्दू संस्कृति, व धर्मराज्य की बात की तो उसे सांप्रदायिक होने के लांछन का सामना करना पड़ा और हिन्दुत्ववादी होने का आरोप लगा। इसका कारण यहाँ है की राष्ट्रीय आन्दोलन के दोरान संघ के नेताओं ने हिन्दू राष्ट्रवाद का नारा लगाया, परन्तु हिन्दू शब्द से उनका तात्पर्य किसी विशेष धर्म या संप्रदाय पद्धति से नहीं है बल्कि भारत में निवास करने वालेसभी लोगों से है।अतः उनका लक्ष्य भारतीय सांस्कृतिक विरासत पर आधारित भारतीय राष्ट्रीयता को पुन:जागृत करना था ।भाजपा ने स्वयं पर लगे साम्प्रदायिकता के आरोप का खंडन करते हुए अपनी पार्टी के संविधान में सकारात्मक पंथ निरपेक्षताको अपनी निष्ठा के रूप में घोषित किया ।भाजपा की पंथनिरपेक्षता भारतीय संस्कृति से विलग नहीं वरन भारतीय संस्कृति से प्रेरित है और भारतीय संस्कृति हिन्दू धरम का प्ररिरूप है ।लेकिन अपनी राजीनीतिक यात्रा में हिंदुत्व तथा प्राचीन राष्ट्रीय संस्कृति की नींव पर खडी भाजपा कांग्रेस की अवसरवादी संस्कृति के चरित्र को अपनाती सी लगी ।जातिवादी राजनीती में संलग्न होने के इस आरोप का दलीय नेतृत्व स्पष्टीकरण देता है कि हम राजसत्ता का प्रयोग करके ही अपने वैचारिक सिद्धांतो को कसौटी पर कस सकते है और राजसत्ता चुनाव में जीत के बिना नहीं मिल सकती ।चुनाव की जीत वोटों को प्राप्त किये बिना नहीं हो सकती और वोट बटोरने के लिए हिन्दू बहुमत को अपने पक्ष में करना अवश्यक है हालाँकि दलित वोट बटोरने के लिए उन्होंने दलित प्रेमी पार्टी के रूप में प्रसारित करने का कार्य भी जोरों से किया पर साथ ही वर्णव्यवस्था को बढ़ावा देने वाले कार्य करती रही। यह सब राजनीति प्रेरित दृष्टिकोण है। हिन्दुत्व की समन्वयता, उदारता, व सदभावना को राजनितिक रंग ने धूमिल कर दिया है।सिद्धांत रूप में तो भाजपा के राजनितिक नेता भी इसे उदारवादी विचारधारा के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

राजनीतिक विचारधारा

भारत ने अपनी लम्बी राजनीतिक यात्रा में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफलता तो हासिल की लेकिन आंशिक रूप से,जिसका मुख्य कारण राजनीती का राष्ट्रीय पुनर्निर्माण और सामाजिक परिवर्तन के ध्येय से विमुख होकर सत्ताभिमुखी होना है।आज भष्टाचार, अपराधीकरण गुटबंदी, कलह और राजनीतीक पार्टियों के बीच और उनके अन्दर असहयोग आदि बुराइयों के फलस्वरूप पूरा राजनीतिक वातावरण दूषित हो गया है । अत: आवश्यक है कि राजनीती में प्रवेश करने वाले लोगों का नैतिक और बौद्धिक स्तर उनके उत्तरदायित्व के अनुरूप हो इसलिए भाजपा मूल्याधारित राजनीति की बात करती है। मूल्य वह विवेक दृष्टि है जो अच्छे और बुरे का बोध जगाती

है। मूल्यों का आग्रह छूट जाने के कारण ही राजनीती विकृत हो गई है और राजनेता तथा राजनैतिक कार्यकर्ता की प्रतिष्ठा को क्षति पहुंची है। भाजपा राजनीती में उच्च मानदंडो के पालन के प्रति प्रतिबद्धता की घोषणा करती है तथा उसकी संगठनात्मक संरचना लोकतंत्र के प्रति उसकी निष्ठा को प्रकट करती है।1975 में जब इंदिरा गाँधी ने आपातकाल की घोषणा की और सब प्रकार की स्वतंत्राओं को स्थगित कर दिया तो भारतीय जनसंघ ने लोकतन्त्र की पुनः स्थापना के लिए संघर्ष में अग्रणी भूमिका निभाई। परन्तु विश्लेषण का तथ्य यह है की 1999 में भाजपानीत राजग सरकार के रूप में भाजपा अपने वैचारिक सिद्धांतों पर कितना कायम रह सकी। दो दर्जन पार्टियों का सहयोग प्राप्त कर भाजपा ने छह साल केंद्र सरकार चलाई लेकिन लोकतान्त्रिक संगठन के रूप में अपनी विश्वसनीयता में रत्ती भर हिज़ाफा नहीं कर सकी । लोकतांत्रिक पद्धतिकी कल्याणकारी व्यवस्था को साकार करने के लिए जिस सार्वजनिक क्षेत्र का विकास किया गया था भाजपा उसमें सुधार करने के बजाय उदारीकरण के मार्ग पर चल पड़ी ।भ्रष्ट्राचार पर अंकुश लगाने के लिए लोकपाल विधेयक लाने में असमर्थ रही और उनके साथी जयललिता और सुखराम भ्रष्टाचार पर उसकी गंभीरता के सबसे बड़े प्रमाण है। यदि आंतरिक लोकतंत्र की बात करें तो उसकी पोल पार्टी से जसवंत सिंह के निष्कासन ने खोल दी। भाजपा के नेता जो कभी नैतिकता के उपदेश दिया करते थे अब अपने विरोधियों की कार्बन कॉपी मात्र बनकर रह गये हैं । यह सत्य है की जब साधनों की शुचिता महत्वहीन हो जाए तो लक्ष्य भी प्रदूषितहोना सुनिश्चित है। भाजपा नेता अरुण शौरी का भी मानना है की भाजपा का मौजूदा संकट उसके काम करने के तरीके से ज्यादा सम्बंधित है। भाजपा स्वयं अपने संकट का समाधान मूल की ओर लोटाने में तलाश रही है।भाजपा ने अपने 'नीति दस्तावेज' **"मूल की ओर लौटे"** शीर्षक में कहा - "पार्टी कार्यकर्ताओ को अपने कार्यक्षेत्र में आदर्श स्थापित करने चाहिए .....हमारी अपनी निजी चेतना और निजी पहचान पार्टी की चेतना,पार्टी के व्यक्तित्व और पार्टी की पहचान से जुड़ने चाहिए अर्थात "**राष्ट्र पहले,फिर पार्टी बाद में हम**."

आर्थिक विचारधारा

भाजपा के आर्थिक दृष्टिकोण की नींव जनसंघ की स्थापना के समय ही पड चुकी थी। जनसंघ ने स्पष्ट किया था किउनका आदर्श भारत को एक सामाजिक और आर्थिक जनतंत्र बनाना है। जिसमें व्यक्ति को समान अवसर और स्वतंत्रता हो।पूर्ण राष्ट्रीयकरण और खुली छूट दोनों को अस्वीकृत करके जनसंघ ने मध्यम वर्ग का समर्थन किया।आर्थिक उन्नति को जनसंघ ने उत्पादन में वृद्धि, वितरण में समानता तथा उपभोग में संयम के जिस त्रिसूत्र का उद्घोष किया था वह आज भी पूरी तरह से सुसंगत, उपादेय तथा व्यवहारिक है। यह गांधीजी के अन्तोदय के विचार का ही पर्याय है और यही बात दीनदयालजी ने एकात्ममानववाद में भी स्पष्ट अभिव्यक्त होती है, इसीलिए भाजपा गांधीवादी समाजवाद व दीनदयाल जी के एकात्मक मानववाद को सामान मानती है और उसमे अपनी निष्ठा अभिव्यक्त करती है। भाजपा का यह भी मानना है कि आधुनिकीकरण के नाम पर तेजी से आए पाश्चात्यकरण ने सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में अनेक समस्याओं और प्रवृत्तियों को जन्म दिया है,

इनका निदान स्वदेशी के मंत्र का पुनच्चार करके ही संभव है। किसी भी देश की खुशहाली का आधार उसकी सफल आर्थिक निति पर निर्भर करता है। देश की अर्थव्यवस्था को इस प्रकार व्यवस्थित करना चाहिये कि उनके उत्पादनों व सामूहिक श्रम का अधिक से अधिक उपयोग हो। भाजपा ने इन दोनों तत्वों को यथेष्ट उपयोग करने का विचार अपने घोषणा पत्र में व्यक्त कियाऔर अपनी नीति को इस प्रकार स्पष्ट किया कि आम आदमी भी उसे आसानी से समझ सके।इसका संक्षिप्तीकरण यह है की हर खेत को पानी, हर हाथ को काम, काम को सही दाम जहाँ पर काम वहीँ पर धाम।

1980 में जनसंघ के नव रूप में जन्म लेने के बाद 1981 में भारतीय जनता पार्टी का संविधान व संकलन प्रकाशित हुआ । समय की आवश्यकता के अनुसार 1982, 84, 89, 91, 92, 94, 96, 99 आदि के वर्षों में संशोधन भी हुए। धारा 2 में पार्टी का उद्देश्य घोषित करते हुए यह लिखा गया कि पार्टी कैसे भारत के निर्माण के लिए प्रतिबद्ध है। जो सुदृढ़ स्मृति व स्वावलंबी राष्ट्र हो जिसका दृष्टिकोण प्रगतिशील एवं प्रबुद्ध हो और जो अपनी प्राचीन भारतीय संस्कृति और मूल्यों से सदैव प्रेरणा ग्रहण करता हो तथा इस प्रकार एक ऐसी महान विश्व शांति एवं न्याय युक्त अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था को स्थापित करने के लिए विश्व के राष्ट्र में अपनी प्रभावशाली भूमिका का निर्वहन कर सके।

धारा 4 में पार्टी ने अपनी निष्ठाएं स्पष्ट की, जिसके अंतर्गत राष्ट्रवाद एवं राष्ट्रीय एकात्मकता लोकतंत्र, गांधीवादी समाजवाद, सकारात्मक, और मूल्य पर आधारित राजनीति के प्रति पार्टी ने प्रतिबद्धता घोषित की। साथ ही आर्थिक व राजनीतिक विकेंद्रीकरण में अपना विश्वास व्यक्त किया । गांधीवादी समाजवाद को विशेष स्थान देते हुए रोजगार की प्राथमिकता को विकास की व्यूह रचना का केंद्र बिंदु बनाकर आम सहमति बनाने का प्रयास करना भी सिद्धांतों के अंतर्गत रखा गया।यधपि पार्टी ने गांधीवाद की यह व्याख्या स्वीकार नहीं की कि लघु ही सुंदर है अथवा वैज्ञानिक व तकनीकी विकास सीमित होना चाहिए, बल्कि पार्टी ने गांधीवादी विचारधारा में लघु, मध्यम, व विशाल के समन्वय की गुंजाइश को देखा और माना कि किसी भी प्रौद्योगिकी को नकारने की आवश्यकता नहीं है जब तक उससे मानव का अवमूल्यनन होता हो और वह शोषण और नव साम्राज्यवाद की स्थापना का उपकरण न बन जाए भारतीय सभ्यता ने सदैव विज्ञान के प्रति नकारात्मक दृष्टि और नैतिक मूल्यों के प्रति सकारात्मक दृष्टि रखते हुए दोनों के समन्वय के द्वारा प्रगति की है अतः विज्ञान व धर्म में समन्वय स्थापित करना समय की आवश्यकता है।

मूल्यों पर आधारित राजनीति के अंतर्गत दरिद्रता को दूर करने का उद्देश्य रखा गया। अतः कहा जा सकता है कि भाजपा का आर्थिक सिद्धांत अंत्योदय अर्थात गरीब में भी सबसे गरीब को सुखी और संतुष्ट किया जाए। यही सबसे बड़ी पूजा है। सभी आर्थिक नीतियों और कार्यक्रमों का केंद्र बिंदु दरिद्र होना चाहिए। जिसे त्रिसूत्री आर्थिक रणनीति (अधिकतम उत्पादन, सामान वितरण, और संयमित उपभोग) के द्वारा प्राप्त करना संभव है।

निष्कर्ष

विस्तृत अध्ययन के बाद यह कहा जा सकता है कि सैद्धांतिक रूप से भारतीय जनता पार्टी के विचारधारा में जहां एक और प्राचीन भारतीय संस्कृति से प्रेरित राष्ट्रीयता का रंग है तो दूसरी ओर राजनीतिक रंग के रूप में लोकतंत्र के प्रति उसकी निष्ठा प्रकट होती है । साथ ही उसने अपनी विचारधारा में उस मूल्य आधारित राजनीतिक संस्कृति को शामिल किया जिसके कारण राजनीति , राजनेता और राजनीतिक कार्यकर्ताओं को समाज में प्रतिष्ठा और सम्मान प्राप्त होता है और भारतीय राजनीति में आयी विकृतियों अवसरवादिता,भ्रष्टाचार,सत्ता प्राप्ति की महत्वाकांक्षा , दल बदल एवं वोट बैंक की राजनीति जिसके चलते जातीय सांप्रदायिक और क्षेत्रीय भावनाओं को भड़काकर सामाजिक विभाजन को तीव्र किया जाता है आदि को दूर किया जा सकता है ।गांधीवादी समाजवाद जो अंत्योदय के 3 सूत्री सिद्धांत (अधिकतम उत्पादन ,सामान वितरण ' संयमित उपभोग) से प्रेरित है अंत्योदय का सिद्धांत दीनदयाल उपाध्याय जी के 'एकात्मक मानववाद' .का ही अंग है इसलिए भाजपा स्वयं स्वीकार करती है कि गांधीवादी समाजवाद व उसके द्वारा अपनी विचारधारा की नींव में स्वीकार किए गए एकात्म मानववाद में कहीं भी विरोधाभास नहीं है । भारतीय संस्कृति के स्वरूप में ही अपनी निष्ठा व आस्था को स्वीकार करते हुए भाजपा ने सकारात्मक धर्मनिरपेक्षता को अपने दल की मूल विचारधारा में प्रस्तावित किया है । यह सिद्धांत धर्म या उपासना पद्धति के आधार पर नागरिकों के बीच भेदभाव नहीं करता और देश के सभी नागरिकों को समानता की गारंटी प्रदान करता है । इस समानता की गारंटी को भारतीय संविधान में समाविष्ट किया गया है।

संदर्भिका

[1] रजनी कोठारी भारत में राजनीतिक पृष्ठ 34 से 35
[2] भारतीय जनता पार्टी का संविधान एवं नियम,2008
[3] 'कार्यकारी दल की रिपोर्ट 1985' -भारतीय जनता पार्टी 1980 से 2005 नीति दस्तावेज।
[4] 'कार्यकारी दल की रिपोर्ट 1985'- भारतीय जनता पार्टी 1980 से 2005 नीति दस्तावेज खंड 4।
[5] आहूजा, गुरदास. भारतीय राजनीति और भाजपा का आगमन प्रकाशक राम कंपनी नई दिल्ली-17
[6] आडवाणी, लालकृष्ण."मेरा देश मेरा जीवन" प्रभात प्रकाशन,4/19 आसफ अली रोड नई दिल्ली-110002
[7] देशमुख, नाना जी."राजनीतिक दुर्भावना के शिकार" राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का विचारों तब विचार उत्तेजक अध्ययन।
[8] हेगड़ी दंतोपंत, एकात्म मानववाद-एक अध्ययन, राजधर्म पुस्तक प्रकाशन लखनऊ।
[9] हेगड़ीदंतोपंत,पंडित दीनदयाल उपाध्याय, विचारदर्शन, सुरुचि प्रकाशन, झंडेवाला।

[10] मलकानी के०आर० प्रसाद, जगदीश. जनसंघ से भाजपा विचारधारा के बढ़ते चरण, प्रकाशक भाजपा केंद्रीय कार्यालय, 11, अशोका रोड, नई दिल्ली-110001

[11] पद्मिनी, हरिश्चंद्र डॉक्टर, डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी, समकालीन दृष्टि में, प्रकाशक, नोएडा न्यूज़ प्रा० ली०48, श्रधानंद मार्ग, दिल्ली-110006

[12] सिन्हा सच्चिदानंद,"भारत का राजनीतिक संकट" ।

[13] उपाध्याय, दीनदयाल."भारतीय राजनीतिक विकास की एक दिशा" लोकहित प्रकाशन लखनऊ।

[14] उपाध्याय, दीनदयाल."भारतीय अर्थनीति: विकास की एक दिशा, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ।

[15] वाजपेयी, अटल बिहारी. कुछ लेख कुछ भाषण।

[16] वाजपेयी, अटल बिहारी. राजनीति की रपतीली राहें।

[17] भारतीय जन संघ 1951 से 1975,"अध्यक्षीय भाषण" प्रकाशक, भारतीय जनता पार्टी 11 अशोका रोड नई दिल्ली-110001

[18] भारतीय जनता पार्टी 1980 से 2005, चुनाव घोषणा पत्र खंड-1, प्रकाशक भारतीय जनता पार्टी 11 अशोक का रोड नई दिल्ली-110001

[19] भारतीय जनता पार्टी 1980 से 2005,"अध्यक्षीय भाषण" भाग-1, खंड-2प्रकाशक, भारतीय जनता पार्टी 11 अशोक का रोड नई दिल्ली-110001

[20] भारतीय जनता पार्टी 1980 से 2005,"अध्यक्षीय भाषण" भाग-2, खंड-3प्रकाशक,भारतीय जनता पार्टी 11 अशोक कारण नई दिल्ली-110001

[21] भारतीय जनता पार्टी 1980 से 2005,"नीति दस्तावेज" खंड-4, प्रकाशक, भारतीय जनता पार्टी 11 अशोक का रोड नई दिल्ली-110001

[22] भारतीय जनता पार्टी 1980 से 2005,"राजनितिकप्रस्ताव" खंड-5, प्रकाशक, भारतीय जनता पार्टी 11 अशोक का रोड नई दिल्ली-110001

[23] भारतीय जनता पार्टी 1980 से 2005,"आर्थिक प्रस्ताव" खंड-6, प्रकाशक, भारतीय जनता पार्टी 11 अशोक का रोड नई दिल्ली-110001

[24] भारतीय जनता पार्टी 1980 से 2005,"अन्यप्रस्ताव" खंड-7, प्रकाशक, भारतीय जनता पार्टी 11 अशोक का रोड नई दिल्ली-110001